मार्च 2018 वर्ष : 1 अंक : 6

सिफरी मासिक समाचार

मात्स्यिकी के गौरवशाली 70 वर्ष

निदेशक की कलम से

आप सभी जानते है कि यह ऐतिहासिक संस्थान अपनी स्थापना के 72 वर्ष पूरे कर चुका है इस उपलक्ष में संस्थान इस वर्ष को एक त्यौहार की तरह मना रहा है। इसके तहत अनेकानेक कार्येक्रमों का आयोजन किया गया है और इस फेहरिस्त में अभी बहुत कुछ करने का हमारा संकल्प है ताकि हमारे संस्थान के गौरवमयी कार्यो एवं वर्तमान क्रियाकलापों को आप तक ऐसे ही इस पत्रिका के माध्यम से पहुँचता रहे। पहले की तरह इस अंक में भी संस्थान की विगत महीने के सभी कार्यो का संक्षित ब्यौरा प्रस्तुत है। संस्थान के वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक, सहायक और अन्य कर्मी, कृषको के सामाजिक उत्थान और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में सदा अपना सहयोग देते रहते है। इसी क्रम में इस माह संस्थान ने पश्चिम बंगाल के किसानों के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण का आयोजन किया जो कि अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के लिए किसानों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायक होगा। जनजातीय उप योजना के तहत मानसद्वीप के जनजातीय मछुआरों को अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन जैसे खाद्य प्रबंधन, रोग प्रबंधन इत्यादि के विभिन्न पहलुओं पर भी प्रशिक्षित किया गया। इस माह भी 72 वें स्थापना दिवस समारोह के अन्तर्गत एक कार्येक्रम का आयोजन किया गया जिसमें वर्षभर के अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी से जुड़े परम विशिष्ट वैज्ञानिको एवं सलाहकारों ने अपने विचार व्यक्त किये। इस कार्यक्रम के अंतर्गत संस्थान में अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के सतत प्रबंधन के लिए प्रासंगिक दिशानिर्देश भी विकसित किए। इसके अलावा संस्थान स्वयं या अन्य संस्थानों के सहयोग से बहुत सारी गतिविधियों में शामिल है जिसका लेखा जोखा यहाँ उपस्थित है। अंत में आप सभी के मार्गदर्शन एवं संस्थान से जुड़े सभी कर्मठ कर्मियों के सहयोग से मैं आशा करता हूँ की संस्थान आगे भविष्य में और ऊंचाइयां हासिल करेगा।

मुख्य शोध उपलब्धियां

कावेरी नदी के नौ सैम्पलिंग स्टेशनों से 86 मत्स्य प्रजातियों को दर्ज किया गया। इनमे से सबसे अधिक साइप्रिनिड वर्ग (31 प्रजातियां) की मछलियां थीं। इसके बाद मुगिलिडा (6 प्रजातियां) और लेनाथिडा (5 प्रजातियां) वर्ग की मछलियां देखी गईं। तीन विदेशी मत्स्य प्रजातियों *ओरियोक्रोमिस मोसाम्बिकस* (मोसाम्बिकस तिलापिया), *क्लेरियस गैरीपरनियस* (अफ्रीकी शार्पटूथ कैटफिश) तथा *ओ. नाइलोटिकस* (नील तिलापियां) को दर्ज किया गया। इनकी पारस्परिक बहुलता क्रमश: 69.14 प्रतिशत, 4.94 प्रतिशत तथा 3.46 प्रतिशत देखी गयी। मछलियां की पकड़ 22 से 170 कि.ग्रा. प्रति दिन थी। सबसे अधिक मछलियों की बहुलता कोलिदाम (170 कि.ग्रा. प्रति दिन) तथा सबसे कम पुमबुहार (22 कि.ग्रा. प्रति दिन) में देखी गयी।

कावेरी नदी में प्रयोग किये जाने वाले जालों की गणना से पता चलता है कि गिल जाल का प्रयोग सबसे अधिक (59 प्रतिशत) होता है। इसके बाद हुक और लाइन जाल (17 प्रतिशत), ट्राप जाल (10 प्रतिशत), कास्ट जाल (9 प्रतिशत) तथा अन्य जालों का प्रयोग किया जाता है।

ताप्ती नदी में मानसून पूर्व एवं मानसून पश्चात् बेंथोस का घनत्व 407 से 7391 सं० प्रति वर्ग मी. तथा 11 से 396 सं० प्रति वर्ग मी. क्रमश: पाया गया। सिम्पसम विविधता सूचकांक के अनुसार मानसून के दौरान अधिकतम विविधता सिंहलखांच में 0.817 तथा मानसून पश्चात् 0.787 मुलताई में दर्ज की गयी।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से निबटने के लिये पश्चिम बंगाल के भोमरा और मथुरा बील, असम के समागुरी बील तथा केरल के वेम्बानाद झील में पेन पालन प्रारंभ किया गया। इन पेन स्थित क्षेत्रों में विभिन्न मत्स्य प्रजातियों को संचयित कर उनके विकास दर का निरीक्षण किया गया।

आर्सेनिक संक्रमित *लेबियो रोहिता* के लीवर का ट्रान्सक्रिप्टोम विश्लेषण किया गया जिससे आर्सेनिकोसिस की अवस्था में करक्युमिन के उपचारात्मक गुणों को पहचाना जा सके तथा जैव सूचकों की पहचान की जा सके। प्राप्त सूचनाओं को अन्तराष्ट्रीय वेबसाइट एन.सी.बी.आई. के डेटाबेस में अभिलेखित किया गया है जिसका नंबर है-(एस.आर.ए. प्रस्तुतीकरण ID एस.आर.आर. 6365041)।

पूर्वोत्तर क्षेत्र तथा चिलिका लैगून की 25 मछलियों में उपस्थित खनिज तत्वों (सोडियम, पोटैशियम, कैलिशयम, आयरन, मैंगनीशियम, कॉपर, जिंक, मैंगनीज, सेलेनियम) के प्रोफाइलिंग को सम्पन्न किया गया।

नवगांव, असम के दो बील क्षेत्र, सामगुरी तथा सिवस्थान पाटुकोलोंग की मत्स्य विविधता, उपज और उपज दर का अध्ययन किया गया। इन बीलों की उपज दर 483-698 कि.ग्रा. प्रति हे. प्रति वर्ष पाया गया। इन बीलों में *नेन्दस नेन्दस*, *मेटासेम्बेलस आरमेटस* और *ओम्पक पाबदा* को देखा गया। संस्थान के द्वारा वर्ष 1996-2002 में किये गये अध्ययन में इन प्रजातियों की उपस्थिति नहीं देखी गई थी। पर यह संभव है कि अगस्त 2017 में ब्रह्मपुत्र नदी में आये भीषण बाढ़ के कारण समागुरी बील में इस नदी के जल के समावेश के कारण इन प्रजातियां का प्रवेश हुआ हो।

अनुसंधान सलाहकार समिति बैठक

संस्थान की अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 5-6 मार्च, 2018 को आयोजित हुई। इस सभा में डा. बी. मधुसूदन कुरूप, पूर्व उपकुलपति, मात्स्यिकी एवं समुद्री विज्ञान विश्वविद्यालय, केरल अध्यक्ष और डा. एस. एम. शिव प्रकाश डा. जी. एन. चटोपाध्याय; डा. सुधीर रायजदा. संस्थान के निदेशक, डा. बसन्त कुमार दास, सदस्य सचिव, डा. एस के नाग अन्य सदस्य थे। समिति ने संस्थान के वैज्ञानिकों को अंतर्स्थलीय खुला जलक्षेत्र प्रबंधन और इसमें दीर्घकालिक मात्स्यिकी के लिये कार्य योजना बनाने का सुझाव दिया तथा साथ ही मत्स्य जैव विविधता में ह्रास, उत्तम गुणवत्ता वाले जलसंसाधनों क्षेत्रो की कमी, भारी धातु एवं कीटनाशकों के कारण जल में प्रदूषण, परभक्षी प्रजातियों का जलक्षेत्र में प्रवेश तथा जलवायु परिवर्तन के हानिकारक प्रभावों पर गहन शोध के लिए प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर सभी परियोजनाओ के प्रधान अन्वेषको ने अपनी परियोजनाओं में किये गये शोध कार्यो पर प्रस्तुति दी। इस अनुसंधान सलाहकार समिति के कार्यकाल की यह अंतिम बैठक थी। इस अवसर पर निदेशक ने समिति को धन्यवाद देते हुए कहा कि उनके द्वारा दिए गये अब तक सभी सुझावो और सलाहों को संस्थान के वैगानिको ने अपने शोध कार्यो में समाहित कर लिया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

8 मार्च, 2018 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में किया गया। प्रभारी निदेशक, प्रभागाध्यक्ष, अध्यक्षा, महिला कक्ष, सदस्या सचिव, महिला कक्ष और सदस्या सचिव, महिला शिकायत कक्ष के साथ मंचासीन हुए। भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक श्रीमती तनुजा अब्दुल्ला ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के महत्व और मत्स्य पालन में महिलाओं की भूमिका के बारे में चर्चा की। संस्थान की महिला कक्ष और महिला शिकायत कक्ष ने इस अवसर पर 'मत्स्यपालन में महिलाओं' पर एक विचार मंथन सत्र आयोजित किया। विचार मंथन सत्र में भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के सभी कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से महिलाओं की सुरक्षा, संस्थान में स्वच्छ वातावरण के लिए जागरूकता, मत्स्यपालन और निति निर्धारण और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए संस्थागत व्यवस्था में सुधार जैसे विभिन्न मुद्दों में भाग लिया। ।

'गंगा नदी की जैव विविधता और सतत मात्स्यिकी संरक्षण' कार्यशाला का आयोजन

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के प्लैटिनम जयंती समारोह के अवसर पर, 15 मार्च, 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में एक कार्यशाला "गंगा नदी की जैव विविधता और सतत मात्स्यिकी संरक्षण" का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला "नमामी गंगे" कार्यक्रम के तहत, गंगा नदी में समग्र मत्स्य विकास पर प्रकाश डालने के लिए आयोजित की गई थी

अपने स्वागत भाषण में भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ बसंत कुमार दास ने सभीप्रतिष्ठित व्यक्तियों और अतिथियो का स्वागत किया। उन्होंने संस्थान द्वारा किए जा रहे एन.एम.सी.जी. गतिविधियों का एक संक्षिप्त विवरण के साथ उन्होंने गंगा नदी के मात्स्यिकी संरक्षण पर जोर दिया ।

एन.एम.सी.जी. के सलाहकार डॉ संदीप बेहरा ने गंगा नदी की जैव विविधता को बचाने के लिए नदी के प्रवाह में सुधार करने पर जोर दिया। उन्होंने जैव विविधता को बचाने के लिए गंगा नदी के किनारे वाले आद्रभूमि के संरक्षण पर भी जोर दिया।

कोलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अमलेश चौधरी ने अपने संबोधन में कहा कि गंगा और ब्रह्मपुत्र दुनिया की सबसे युवा नदीयां है। उन्होंने कहा कि 1940-1960 के दौरान गंगा नदी में मछली की बीज उपलब्धता बहुत अधिक थी। पर प्रदूषण के कारण बीज उपलब्धता घटती जा रही है।

पदम श्री प्रोफेसर रविंद्र कुमार सिन्हा, नालंदा ओपन यूनिवर्सिटी के कुलपति और समारोह के मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि सीआईएफआरआई 1950 के दशक से गंगा नदी की मात्स्यिकी, प्लैंकटन और बेन्थोस डेटा का दस्तावेजिकरण कर रहा है। केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के कारण गंगा नदी प्रणाली का समय श्रृंखला डेटा उपलब्ध है । उन्होंने कहा कि गंगा नदी की मत्स्य को समझने और संरक्षित करने के लिए बेसिन प्रबंधन दृष्टिकोण की आवश्यकता है। आजादी के बाद, गंगा नदी पर बड़ी संख्या में बैराज और नहरों की स्थापना की गई है। अब नदी न केवल प्रदूषण का सामना कर रही है, बल्कि कम प्रवाह से भी जूझ रही है।

डॉ. जे. के. जेना, उप महानिदेशक (मत्स्यिकी) भाकृअनुप ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के प्लैटिनम जयंती समारोह के अवसर पर संस्थान के कर्मचारियों का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि हमने कुछ सबक गंगा एक्शन प्लान से सीखा है और महत्त्वपूर्ण सुझाव दिया कि हमें समस्या से नई रणनीतियां बनाकर उबरना चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि संस्थान को गंगा नदी के संरक्षण और दीर्घकालिक मात्स्यिकी के लिए एक रोडमैप तैयार करना चाहिए।

हुगली नदी मत्स्य संचयन कार्यक्रम

संस्थान द्वारा दिनांक 15 मार्च 2018 को हुगली नदी के बैरकपुर-दक्षिणेश्वर स्ट्रेच बैरकपुर, पश्चिम बंगाल में मत्स्य संचयन कार्यक्रम का आयोजन किया । इस दौरान इंडियन मेजर कार्प के 50,000 अंगुलिकाओं को पदमश्री पुरस्कार

विजेता प्रोफेसर रविंद्र कुमार सिन्हा, नालंदा ओपन यूनिवर्सिटी के कुलपति एवं डॉ. जे. के. जेना, उप महानिदेशक (मत्स्यिकी) भाकृअनुप सहित अन्य सम्मानित अथितियो द्वारा गंगा नदी में छोड़ा गया।

"अन्तर्स्थलीय खुले पानी में पिंजरे पालन " पर विचार मंथन सत्र का आयोजन

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 16 मार्च 2018 को बैरकपुर में " खुला जल क्षेत्र में पिंजरे में मछली पालन" पर विचार मंथन सत्र का आयोजन किया। इस मंथन सत्र में अन्तर्स्थलीय पिंजरे पालन से संबंधित विविध पहलुओं को शामिल किया गया, जैसे कि भारत के जलाशयों / आद्रछेत्रो में पिंजरे पालन की वर्तमान स्थिति, विभिन्न प्रजातियों का पालन, भोजन और स्वास्थ्य प्रबंधन, प्रजातियों के विविधीकरण की आवश्यकता आदि । इस सत्र का मुख्य उद्देश्य भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित पिंजरा पालन तकनीक को एनसीपीसी, एनईपीसीसीओ, उद्यमी, राज्य मत्स्यपालन विभाग, विश्वविद्यालय, एनजीओ और विभिन्न जल संसाधन विभाग जैसे किसानों, सार्वजनिक क्षेत्र इकाइयों (पीएसयू) के बीच प्रौद्योगिकी को अधिक से अधिक बढ़ावा देना था। श्री एम एस ढाकड़, एमडी, एमपी मत्स्यपालन संघ, मुख्य अतिथि के रूप में एवं डॉ एन पी सिंह, निदेशक, आईसीएआर-एनआईएएसएम, बारामती और मधुमिता मुखर्जी, मत्स्यपालन विभाग, मत्स्य विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार के सम्मानित अतिथि के रूप में मौजूद थे।

सत्र की शुरुआत डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैराकपुर द्वारा स्वागत भाषण से हुई। अपनी टिप्पणी में उन्होंने भारत

के अन्तर्स्थलीय खुले जल में पिंजरे में मछली पालन की स्थिति का एक सिंहावलोकन प्रस्तुत किया और पइस प्रौद्योगिकी के विकास और प्रसार में भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान की भूमिका पर प्रकाश डाला।

श्री एम एस ढाकड़, प्रबंध निदेशक, एम.पी. मत्स्यपालन संघ और सत्र के मुख्य अतिथि ने देश में द्वितीय नील क्रांति के लक्ष्य को पूरा करने एवं पोषण सुरक्षा प्राप्त करने में पिंजरे में मछली पालन की संभावनाओं पर प्रकाश डाला और भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान को इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आह्वान किया। उन्होंने पिंजरे पालन प्रौद्योगिकी को आर्थिक रूप से व्यवहार्य और देश के छोटे किसानों के लिए व्यवहृत बनाने पर जोर दिया।

आई.सी.ए.आर.-एन.आई.ए.एस.एम. बारामती के निदेशक डॉ. एन. पी. सिंह ने अन्तर्स्थलीय मत्स्यपालन के क्षेत्र में अनुसंधान और विकास में उत्कृष्टता के सत्तर से अधिक गौरवशाली वर्षों को पूरा करने के लिए संस्थान को बधाई दी और पिंजरे पालन के सफलता के लिए इनपुट, अधिक गुणवत्ता वाले मत्स्य बीजों और फ़ीड की उपलब्ध आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ. ए. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने पिंजरे पालन पर सीआईएफआरआई के अनुभव पर एक प्रस्तुति दी, एवं आगे की संभावनाओ के बारे में विस्तार से बताया। अपनी प्रस्तुति में उन्होंने भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा पिंजरे पालन प्रौद्योगिकी के विकास का आकलन जैसे इसकी वर्तमान स्थिति, देश के विभिन्न हिस्सों में इस तकनीक की सफलता की परिदृश्य और पिंजरे पालन के विकास के लिए निजी निवेश की आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ. बी. सी. झा ने सभा को संबोधित करते हुए पिंजरा पालन पर अपने अनुभव साझा किए और पिंजरे में मछली पालन तकनीकि के विस्तार के लिए जलाशयों की कसमस्यओं से सम्बंधित विचार को उठाया।

अपनी टिप्पणी में, डॉ मधुमिता मुखर्जी, अतिरिक्त निदेशक, मत्स्य विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार ने संस्थान को अपनी प्लैटिनम जयंती मनाने के लिए बधाई दी और कहा कि राज्य में पिंजरे पालन के विकास के लिए विभिन्न प्रजातियों और कौशल विकास के लिए पिंजरे में मछली पालन प्रोटोकॉल के लिए राज्य सरकार भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान से उम्मीद कर रहे हैं। उन्होंने कोयला खदानों में स्थित गड्ढे में पिंजरे पालन के लिए पश्चिम बंगाल राज्य द्वारा उठाए गए कदमों पर प्रकाश डाला और भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान को क्षेत्र आधारित पिंजरे पालन मॉडल का विकास करने का आग्रह किया।

डॉ छाया जादव, निदेशक एफ.सी.एस. लांजा महाराष्ट्र और डॉ किरण दुबे, प्रधान वैज्ञानिक , आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.ई. ने जलाशयों में पिंजरे पालन पर अपने अनुभव साझा किए। डॉ दुबे ने हिमाचल प्रदेश और महाराष्ट्र के जलाशयों में कार्प और महाशीर के बीजों और डीम्बों को जलाशय में सामुदायिक वयस्था द्वारा पिंजरे में मत्स्य पालन में महिलाओं की भागीदारी पर अपनें अनुभव साझा किए। डॉ. यादव ने पंगास की पिंजरे पालन में एफसीएस लांजा की सफलता साझा की।

इस अवसर पर पिंजरे पालन पर एक बुलेटिन भी जारी किया गया। डॉ ए के साहू, वैज्ञानिक द्वारा धन्यवाद प्रस्तावित के साथ उद्घाटन सत्रसमाप्त हुआ।

दुसरे सत्र में राज्यों के मत्स्यपालन विभाग, हितधारक और निजी उद्यमियों (एबीआईएस, ग्रोवेल, गर्व, शालीमार, एक्वाटिका इत्यादि) के प्रतिनिधियों ने भाग लिया पीएसयू (एनएचपीसी, नीप्को) एनजीओ और प्रगतिशील किसानों ने पिंजरे पालन पर अपने अनुभव साझा किए।

दोपहर के सत्र में एक किसान-उद्यमी- वैज्ञानिक इंटरफेस बैठक आयोजित की गई जहां ओडिशा और झारखंड के पिजरें में मछली पालन से जूडे पिंजरे के प्रगतिशील किसानों ने अपने अनुभव साझा किए। झारखंड, आंध्र प्रदेश के मत्स्यपालन अधिकारियों ने भी अपने अनुभव को साझा किया। विशेषज्ञ वैज्ञानिकों और उद्यमियों ने किसानों के साथ अन्तर्स्थलीय खुले पानी में लाभकारी पिंजरे की खेती के लिए बातचीत की।

डॉ एस सामंत प्रधान वैज्ञानिक ने इस अवसर पर धन्यवाद ज्ञापन दिया।

संस्थान का 72वां स्थापना दिवस

इस संस्थान की स्थापना 17 मार्च, 1947 बैरकपुर, पश्चिम बंगाल में केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्यपालन स्टेशन के रूप में की गई थी। भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के 72 वें स्थापना दिवस को 17 मार्च 2018 को बैरकपुर में वर्षभर प्लैटिनम जयंती के रूप में मनाया गया। डॉ. डी. डी. पात्रा, उपकुलपति, बिधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय, मोहनपुर को प्लैटिनम जयंती समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में सम्मानित किया गया। डॉ.

एन. पी. सिंह, निदेशक, आई.सी.ए.आर.- एन.आई.ए.एस.एम. बारामती; डॉ. पी. पी. दास, पूर्व निदेशक, आई.सी.ए.आर- एन.बी.एफ.जी.आर, लखनऊ, डॉ. एम. एम. मुखर्जी, अतिरिक्त निदेशक, डी.ओ.एफ, पश्चिम बंगाल; श्री सौम्यजीत दास, एम.डी., एस.एफ.डी.सी., पश्चिम बंगाल; और बैरकपुर नगर पालिका (उत्तर) के अध्यक्ष श्री मलय घोष को इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में मंच पर आमंत्रित किया गया। भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि पिछले एक साल (प्लैटिनम जयंती वर्ष) में भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने गंगा नदी एवं अन्य नदियों पर विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, कार्यशालाओं, राष्ट्रीय संगोष्ठियों और अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया है| उन्होंने बताया कि संस्थान की स्थापना के बाद से ही मत्स्य प्रजनन और मत्स्य बीज उत्पादन पर बहुत उपयोगी अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रौद्योगिकियां विकसित की गयी हैं| संस्थान ने अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के सतत प्रबंधन के लिए प्रासंगिक

दिशानिर्देश भी विकसित किए हैं। कुलपति डॉ. डी. डी. पात्रा ने अपने उद्बोधन में इस बात पर जोर दिया कि आईसीएआर-सीआईएफआरआई देश में अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन में क्रांति लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। डॉ. मधुमिता मुखर्जी, ए.डी.एल., मत्स्यपालन विभाग, पश्चिम बंगाल ने इस संस्थान की बड़ी सफलता के साथ 72 वें स्थापना दिवस पर बधाई दी और उन्होंने भविष्य में उपयुक्त मछली प्रजातियों के साथ-साथ पिंजरा पद्धति को ओर अधिक ऊंचाई तक ले जाने के लिए संस्थान की भूमिका और क्षमता पर प्रकाश डाला। डॉ. पी. पी. दास ने संस्थान

को दूसरी नीली क्रांति के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में काम करने के लिए जोर दिया।

इस अवसर पर देश के पूर्वी एवं उत्तर पूर्वी राज्यों में मत्स्य विकास के लिए रोड मैप, सक्सेस स्टोरीज ऑफ़ "निकरा प्रोजेक्ट", केज कल्चर इन इनलैंड ओपन वाटर्स ऑफ़ इंडिया : आई सी ए आर-सिफरी पर्सपेक्टिव, स्मारिका-प्लैटिनम जुबिली, जी. आई. एस. मैपिंग ऑफ़ वाटर बॉडीज ऑफ़ ओडिशा तथा अन्य बुलेटिन/लीफलेट का विमोचन किया गया।

इस महत्वपूर्ण अवसर पर आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर, कोलकाता और मैसर्स एम. आर. एक्वाटेक, भुवनेश्वर, ओडिशा के बीच दो सी.आई.एफ.आर.आई. प्रौद्योगिकियों (अर्थात् सीआईएफआरआई पेन एचडीपीई और सीआईएफआरआई कैजग्रोव फ़ीड) के विनिर्माण (लाइसेंस अवधि: 5 वर्ष) के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए |

भारत में अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के विकास में समग्र योगदान के लिए प्रगतिशील महिला मत्स्य पालकों और जलाशय में कार्यरत पश्चिम बंगाल, ओडिशा और झारखंड के मछुआरों को स्थापना दिवस के मौके पर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर संस्थान के पूर्व सेवानिवृत्त वैज्ञानिको और कर्मचारियो, राज्य विभाग के अन्य अधिकारियो, मछुआरे और उद्यमी मौजूद थे।

माननीय प्रधान मंत्री के सम्भाषण का सीधा प्रसारण

दिनांक 17 मार्च को कृषि उन्नति मेला के अवसर पर माननीय प्रधान मंत्री के सम्भाषण का सीधा प्रसारण संस्थान के सभागार में किया गया जिसमें सस्थान के समस्त कर्मचारियों सहित मत्स्य कृषक (लगभग 200 के करीब) ने भाग लिया।

सिफरी ज्ञान स्थल का उद्घाटन

15 मार्च, 2018 को सिफरी ज्ञान स्थल का उद्घाटन पदमश्री डॉ आर के सिन्हा, कुलपति नालंदा विश्वविद्यालय, डॉ. जे. के. जेना, उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) एवं अन्य गणमान्य अतिथियो के द्वारा किया गया। सिफरी के कृष्णा बगीचे में इस ज्ञान स्थल का निर्माण किया गया है।

शीत कक्ष का उद्घाटन

सिफरी शीत कक्ष का उद्घाटन पदमश्री डॉ आर के सिन्हा, कुलपति नालंदा विश्वविद्यालय, डॉ जे के जेना, उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) एवं अन्य गणमान्य अतिथियो ने 15 अप्रैल 2018 को रिबन काटकर किया। इस शीत कक्ष में -20° से लेकर -80° तक के शीतक रखे गए है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान के 72 वे स्थापना दिवस के मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, इस दौरान संस्थान के अधिकारियों और कर्मचारियों ने मिलकर कई कार्यक्रमो का आयोजन किया। जिसमें प्रमुख रहे : संस्थान की महिला कर्मियों द्वारा क्षेत्रीय वेशभूषा का प्रदर्शन, क्षेत्रीय नृत्य, माँ के दुर्गा रूप का नृत्य, व्यंग्य, और व्यंग्य नाटक का मंचन। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन मुख्यतः डॉ. अपर्णा रॉय, वैज्ञानिक ने किया। संस्थान की महिला कर्मियों ने इस कार्यमक्रम के दौरान अपनी अपनी क्षेत्र की वेशभूषा का प्रदर्शन किया जिससे अनेकता में एकता की झलक दिखाई पड़ रही थी। सुश्री प्रीतिज्योति माँझी और श्रीमती नीति शर्मा, वैज्ञानिको ने अपने अपने क्षेत्र का नृत्य प्रस्तुत किया। इन नृत्यों को देखकर सभी क्षेत्र-विशेष की सांस्कृतिक विरासत से परिचित हो सके।

श्रीमती कोयल रॉय पत्नी डॉ. ध्रुव ज्योति सरकार ने माँ के दुर्गा रूप का "ईगीर नन्दिनी" नृत्य प्रस्तुत किया था जिसको देखकर सभी ने उनकी भूरी भूरी प्रशंसा की। डॉ रोहन कुमार रमन, वैज्ञानिक ने अपने हास्य प्रसंगो से सभी को लोटपोट कर दिया। जिसके उपरांत एक व्यंग्य नाटक का मंचन किया गया।

'आँखों में ऊँगली दादा' नाटक का मंचन

सभागार में वैज्ञानिकों और कर्मचारियों ने मिलकर बंगाली भाषा के एक लघु नाटक 'चोखे आंगुल दादा ' (रचनाकार : श्री मनोज मित्रा) का हिंदी भाषा में मंचन किया | इस नाटक का हिंदी शीर्षक था 'आँखों में ऊँगली दादा'| इस नाट्य प्रस्तुति में वैज्ञानिको एवं कर्मचारियों ने अपने अभिनय द्वारा मुख्य किरदारों को जीवित कर दिया था | इस नाटक के निर्माता डॉ बी के दास निर्देशक, आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.आर.आई., बैरकपुर थे और श्री आशीष रॉय चौधुरी, तकनिकी अधिकारी ने इसका निर्देशन किया था। अधिमिश्रण और

हिंदी में संवादो का रूपांतरण श्री प्रवीण मौर्य और डॉ. अपर्णा रॉय, वैज्ञानिको ने किया। मुख्य किरदारों को अपने संजीदा अदाकारी से निभाया : उद्घोषक - डॉ. मलय कुमार नस्कर, प्रधान वैज्ञानिक; दानव - डॉ. प्रणय कुमार परिदा, वैज्ञानिक; आँखों में ऊँगली दादा - श्री सुभाशीष बनर्जी, अस्थायी कर्मचारी; चित्रगुप्त - श्री मितेश एच रामटेके, वैज्ञानिक; और विधाता - श्री. श्रवण कुमार शर्मा, वैज्ञानिक। संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास, ने इस उत्तम प्रस्तुति के लिए सभी नाट्य कलाकारों की प्रशंसा की और इस नवीनतम प्रस्तुति के लिए धन्यवाद दिया।

जनजातीय उप योजना (टी.एस.पी.) के तहत मानसद्वीप में दो दिनो का कैंपस प्रशिक्षण

26 मार्च से 27 मार्च, 2018 तक जनजातीय उप योजना के तहत मानसद्वीप (सागर द्वीप) में संस्थान द्वारा दो दिन का कैंपस प्रशिक्षण आयोजित किया गया। लगभग 100 मछुआरों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। विवेकानंद युवा और सांस्कृतिक सोसाइटी, सागर द्वीप के सहयोग से संस्थान ने एक ऑफ-कैंपस प्रशिक्षण आयोजित किया था। इस आयोजन से पूर्व मछुआरों की जरूरतों को समझने के लिए खुले मंच द्वारा चर्चा की व्यवस्था भी की गई थी। उनकी जरूरतो के आधार पर मत्स्य उत्पादन के लिए अपशिष्ट जल निकायों के महत्व का पता

चला | मछुआरों को अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन जैसे खाद्य प्रबंधन, रोग प्रबंधन इत्यादि के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया था। पानी की गुणवत्ता का आंकलन करने के लिए एक उपयोगी व्यावहारिक सत्र भी आयोजित किया गया। ऑफ-कैंपस प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन डॉ. एम. ए. हसन, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. अपर्णा रॉय, वैज्ञानिक, डॉ. प्रणब गोगोई, वैज्ञानिक और श्री सुवेन्दु मंडल, वरिष्ठ तकनीकी सहायक द्वारा किया गया।

जनजातीय उप योजना के तहत गोलपाड़ा, असम की जनजातियों के लिए अपशिष्ट जल निकायों में मत्स्य पालन संवर्द्धन पर जागरूकता कार्यक्रम

मार्च 28, 2018 को संस्थान के गुवाहाटी केंद्र द्वारा रबड़ बोर्ड, ज़ोनल ऑफिस, गुवाहाटी के सहयोग से दरंगगिरी, दुधनोई में भाकृअनुप के जनजातीय उप योजना कार्यक्रम के अन्तर्गत गोलपाड़ा, असम, के जनजातियों के लिए अपर्याप्त जल निकायों में मत्स्य पालन संवर्द्धन पर एक जागरूकता कार्यक्रम को आयोजित किया गया।

यह कार्यक्रम असम के रबड़ उत्पादन क्षेत्रों में अप्रयुक्त जल निकासी वाले जल निकायों में मछली उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से, आयोजित किया गया और इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती उर्मी मेधी, ए.सी.एस., सर्किल अधिकारी, दुधनोई राजस्व मंडल, गोलपाड़ा ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। डॉ. यू. के. बरुआ, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, केवीके, दुधनोई, श्री एस सेल्वराज, संयुक्त रबर उत्पादन आयुक्त, रबड़ बोर्ड ज़ोनल कार्यालय, गुवाहाटी, डॉ. भगवन कलिता, मत्स्य विकास अधिकारी, मत्स्य विकास कार्यालय (डी.एफ.डी.ओ.), गोलपाड़ा; श्री देबानंदा चौधरी, अध्यक्ष, रबर प्रोड्यूसर सोसाइटी गोलपाड़ा; श्री देलोवर हुसैन, उप परियोजना निर्देशक, सी.एस.एस.-ए.टी.एम.ए., गोलपाड़ा; भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक; रबर बोर्ड के अधिकारी; गोलपाड़ा जिले, असम और मीडिया कर्मियों के के सहित विभिन्न क्षेत्रों से 100 से अधिक मत्स्य क्रषकों ने भाग लिया।

डॉ. बी. के. भट्टाचार्ज्य, केंद्र प्रमुख, गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुऐ पूर्वोत्तर राज्यों में भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान की गतिविधियों को संक्षिप्त रूप से समझाया, जिसमें असम के विभिन्न खुले जल निकायों में मत्स्य पालन पर विशेष जोर दिया गया। किसानों ने मत्स्य पालन से अपनी आय बढ़ाने के लिए संस्थान और अन्य संसाधनों के मत्स्य विशेषज्ञों से बातचीत की।

श्री एस सेल्वराज (रबड़ बोर्ड) ने छोटे जल निकायों वाले रबड़ उत्पादकों से आग्रह किया कि वे इन संसाधनों का उचित तरीके से उपयोग करके अपनी आय और आजीविका में सुधार कर सकते हैं। डॉ. यू. के. बरुआ (केवीके, दुधनोई) ने एकीकृत कृषि व्यवस्था के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि रबड़ के पौधे के बीज मछली के भोजन के लिए मूल्यवान पोषक तत्वों का अच्छा स्रोत हो सकते है। श्रीमती उर्मी मेधी ने जनजातीय मछुआरो में मत्स्य पालन के विभिन्न तरीको को अपनाने के लिए प्रति जागरूकता पैदा करने और इसका अभ्यास करने के लिए भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि जिले के ज्यादातर जनसंख्या आदिवासी (राभा, बोडो और गारो) हैं, जो आम तौर पर सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित हैं। उन्होंने प्रतिभागियों से आग्रह किया कि संस्थान द्वारा आयोजित जागरूकता कार्यक्रम का लाभ उठाएं ताकि जिले के अप्रयुक्त जल निकायों में मछली उत्पादन वैज्ञानिक तरीकों को शुरू किया जा सके। तकनीकी सत्र एक संक्षिप्त प्रस्तुति के साथ शुरू हुआ| मछुआरों को अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन जैसे खाद्य प्रबंधन, रोग प्रबंधन जल गुणवत्ता प्रबंधन,जलीय कृषि के लिए तालाब की तैयारी, भोजन भंडारण, जलीय कृषि में मछली स्वास्थ्य प्रबंधन मछली पकड़ने और मत्स्य भोजन एवं इसको खिलाने के तरीकों के महत्व आदि पर चर्चा की गई| श्रीमती शीजा, विकास अधिकारी, रबड़बार्ड क्षेत्रीय कार्यालय, ने प्रशासकों, वैज्ञानिकों, विकास अधिकारियों, रबड़ उत्पादकों, समाचार और मीडिया को जागरूकता कार्यक्रम के सफल करवाने में योगदान देने के लिए जोर दिया।

आत्मा (ए.टी.एम.ए.) के तहत अलीपुरद्वार, पश्चिम बंगाल के किसानों के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने अलीपुरद्वार, पश्चिम बंगाल के बीस किसानो को 31 मार्च, 2018 से 03 अप्रैल, 2018 के दौरान आत्मा(ए.टी.एम.ए.) द्वारा प्रायोजित कौशल विकास कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षित किया। इसमे चार जनजातीय किसान भी शामिल थे। चार दिनों के इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन 31 मार्च, 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास द्वारा किया गया। भूमिगत मत्स्य पालन प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं में किसानों के कौशल विकास और उनकी आजीविका को सुरक्षित करने के लिए पोषक तत्वों का विशेष महत्त्व होता है। अलीपुरद्वार (कुमार्ग्राम ब्लॉक) में आबादी के हिसाब से बारहमासी और मौसमी जल निकायों की भरमार हैं। इनसे कृषको की आजीविका में सुधार का मार्ग प्रशस्त दिखाई पड़ता है। जिसको मत्स्य पालन और जलीय कृषि के विकास के द्वारा पाया जा सकता है। इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम देश में अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के लिए किसानों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायक हो सकते है। इस कार्यक्रम के द्वारा क्षेत्रीय व्यावहारिकता, क्षेत्र निरीक्षण, प्रदर्शनियां और कक्षा-सत्रों के माध्यम से खुले पानी जैसे मन, चौर, तालाबों और टैंक इत्यादि में मत्स्य उत्पादन के बारे में संभावनाए तलाशी गई| डॉ. बसन्त कुमार दास ने किसानों के व्यावहारिक कौशल को आगे बढ़ाने के लिए संबंधित क्षेत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रम पर जोर दिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को डॉ. ए. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, प्रशिछाण कक्ष द्वारा संचालित किया गया था।

संस्थान अनुसंधान समिति की बैठक

संस्थान अनुसंधान समिति की बैठक संस्थान मुख्यालय में दिनांक 18 से 20 मार्च, 2018 को निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित हुई। इस बैठक में संस्थान के मुख्यालय एवं अधीनस्थ केन्द्रों के समस्त वैज्ञानिको ने अपने अपने शोध कार्यो का विवरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर निदेशक ने सभी वैज्ञानिको के कार्यो की समीक्षा की एवं उचित दिशा निर्देश दिये| इस बैठक के अंतिम दिन मुख्यालय एवं अधीनस्थ केन्द्रों के समस्याओं के निपटारे के लिए निदेशक ने सभी प्रशासनिक एवं वित्तीय अधिकारियो के साथ मीटिंग की| सभा के अंत में सदस्य सचिव ने धन्यवाद ज्ञापन दिया |

संस्थान की दो तकनीको का व्यवसायीकरण

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और एम. आर. एक्वाटेक के बीच संस्थान की दो तकनीको यथा 'सिफरी पेन' और 'सिफरी केजग्रो फीड'के व्यवसायीकरण के लिए समझौते ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये गए संस्थान की ओर से निदेशक ने एवं एम् आर ऐक्वाटेक की तरफ से श्री रामेश्वर दास ने हस्ताक्षर किये इस समझौते के तहत 5 साल के लिए एम. आर. ऐक्वाटेक को इन दो तकनीको को निर्मित करने के लिये संस्थान की तरफ़ से लाइसेंस दिया गया है

स्थापना दिवस के अवसर पर संस्थान के विभिन्न प्रकाशनों का विमोचन

संस्थान के 72 वे संस्थापना दिवस के अवसर पर गणमान्य अथितियो द्वारा संस्थान के प्रकाशनों का विमोचन किया गया| कुछ मुख्य प्रकाशन निम्नलिखित है|

रोडमैप फॉर डेवलपमेंट ऑफ़ ओपन वाटर फिशरीज इन नार्थ ईस्टर्न स्टेट्स ऑफ़ इंडिया

रोडमैप फॉर डेवलपमेंट ऑफ़ ओपन वाटर फिशरीज इन ईस्टर्न स्टेट्स ऑफ़ इंडिया

सक्सेस स्टोरीज: सिंथेसिस फ्रॉम प्रोजेक्ट निकरा आउटपुट डियुरिंग फेज 1 (2012-2017)

केज कल्चर इन इनलैंड ओपन वाटर्स ऑफ़ इंडिया : आई सी ए आर-सिफरी पर्सपेक्टिव (स्मारिका प्लैटिनम जुबिली)

जी आई एस मैपिंग ऑफ़ वाटरबॉडीज ऑफ़ ओडिशा

प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक 23 फरवरी, से 1 मार्च, 2018 तक बिहार के भागलपुर जिले के 30 मछुआरों के लिये "अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

दिनांक 3 मार्च, 2018 को एनएएएसपीएएडी परियोजना के अंतर्गत संस्थान ने मात्स्यिकी विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार तथा पश्चिम बंगाल पशु एवं मात्स्यिकी विज्ञान के साथ उत्तर 24 परगना के हसनाबाद में "एक्यूट हेपटो पन्क्रेअटिक नेक्रोसिस डिजीज / अर्ली मोर्टेलिटी सिंड्रोम" विषय पर एक जन-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें 100 मछुआरों ने भाग लिया।

ओडिशा के मयुरभंज जिले में "कालो जलाशय में पालन आधारित मात्स्यिकी" विषय पर दिनांक 6 से 9 मार्च 2018 तक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसमें 27 मछुआरों ने भाग लिया।

दिनांक 6 से 12 मार्च 2018 तक बिहार के लखीसराय जिले के 30 मछुआरों के लिये "अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन" पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

महत्वपूर्ण बैठके

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और मछुआरा सहकारी समिति, भोमरा बील पश्चिम बंगाल के बीच पेन पालन पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और फिशरीज कमिश्नर, गुजरात सरकार के बीच 18 फरवरी, 2018 को वाधवान में बैठक आयोजित हुई जिसका उद्देश्य गुजरात राज्य में पिंजरे में मछली पालन तकनीक का प्रचार तथा मत्स्य प्रजातियों का विविधीकरण करना था।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और मात्स्यिकी निदेशक, ओडिशा सरकार के बीच 24 फरवरी, 2018 को कटक में बैठक आयोजित हुई जिसका उद्देश्य ओडिशा के निष्क्रिय जलक्षेत्रों में मात्स्यिकी विकास करना था।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने दिनांक 8 से 9 मार्च, 2018 के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित निदेशक के एक सम्मेलन में भाग लिया।

संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक, डा. विजय कुमार बेहरा ने दिनांक 6 मार्च, 2018 को बिहार प्राणीविज्ञान विश्वविद्यालय अधीनस्थ मात्स्यिकी महाविद्यालय, पटना के बीएफएससी के विशेषज्ञ समिति की बैठक में भाग लिया।

निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने दिनांक 18 मार्च, 2018 को विज्ञान परिषद कोलकाता द्वारा आयोजित "थिंक इण्डिया" में भाग लिया

राष्ट्रीय कार्यशाला

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने दिनांक 12 से 13 मार्च, 2018 के दौरान भाकृअनुप- केन्द्रीय मीठजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान ओडीशा द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला, "एन्टी माइक्रोबिअल रेसिस्टेंस एंड अल्टरनेटिव तो एंटीबायोटिक यूज़ इन एक्वाकल्चर" में भाग लिया।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने दिनांक 6 से 8 मार्च, 2018 के दौरान कृषि ओडिशा कार्यशाला में भाग लिया।

सेवानिवृत्ति

इस माह संस्थान से श्री स्वपन गायन कुशल सहायक कर्मचारी प्रसार एवं प्रशिक्षण कक्ष से सेवानिवृत्त हुए। उनको संस्थान के मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित सेवानिवृति समारोह के अन्तर्गत विदाई दी गई। इस समारोह में निदेशक कि अध्यक्षता में समस्त कर्मचारियों ने भाग लिया और उनकी कर्तव्य निष्ठता पर अपने अपने विचार साझा किये।

सम्पादक मंडल की तरफ से

संपादक मण्डल की तरफ़ से इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य आप सभी पाठको को संस्थान की मुख्य गतिविधियों से अवगत करवाना है। यह पत्रिका संस्थान का एक प्रतिबम्ब दिखाती है। जिसके द्वारा पाठको को जैविक एवं जलीय संसाधनों कि सामयिक अवस्था एवं उस पर हो रहे शोध कार्यो से अवगत करवाना है। हम संस्थान से जुड़े सभी कर्मियों को धन्यवाद देते है जो इस पत्रिका के लिए जरुरी सामग्री मुहैया करवाते है। उन्ही के सहयोग से हे यह पत्रिका समय पर प्रकाशित हो पाती है। हर अंक के तरह इस अंक में भी अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी के जुड़े विभिन्न पहलुओ पर संस्थान के क्रियाकलापों का विवरण प्रस्तुत है। आशा है आप को इस अंक कि सामग्री ज्ञानवर्धक और जानकारियों से परिपूर्ण लगेगी ।

प्रकाशक मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक, संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कसिम एवं सुनीता प्रसाद, फोटोग्राफी : सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2008 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत दूरभाष: 91-33-25921190/91 फैक्स: 913325920388 ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in